मुंबई की जिजीविषा को सलाम

डॉक्टर श्रीधर द्विवेदी,
डीन एवं प्रिंसिपल,
हमदर्द मेडिकल इंस्टिट्यूट एंड रिसर्च,
नई दिल्ली ,११००६२.

तेरह जुलाई की भयानक काली कुत्सित शाम,
हीरे जवाहरात का केंद्र मुंबई का झवेरी बाज़ार,
सोने से लैस चमकता ओपेरा हाउस अभिराम,
चाँदी व्यापार का दमदार स्थान जीवंत दादर,
आसन्न आतंक से सब बेखबर.

तभी अचानक बम धडाको की गूंज,
भयंकर हाहाकार खून खराबा चीत्कार,
असहाय आर्त रक्त से लथपथ विकल,
स्तब्ध लोग मानो प्राण गए निकल.

जाने कितने अपाहिज और अपंग हुए,
शब्दहीन अंगहीन कितने बेमौत मरे,
सैकड़ो सहसा बेसहारा अनाथ हुए,
लोग शर्मसार   कुदरत बोल उठी अरे अरे!

सरकारी अमलो को जैसे सांप सूंघ गया,
मदद के लिए आये राहगीर चेहरे बेनाम,
संचार तंत्र जाम मानो लकवा मार गया,
घायलों को अस्पताल ले जाते बेलौस आम.

बेकसूर लोगो का खौफनाक कत्ले आम,
किसके लिए क्या हासिल किया जालिम तूने,
यह तो सोलहो आने गुनाह,
मनुष्यता के नाम पर कलंक,

सर्वोच्च सत्ता की मर्जी के खिलाफ,
दगाबाजी कुयश कीच पंक.

राह चलते मासूमो ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा था,
शासन देश या किसी के प्रति गुस्सा था,
तो उसके सिपहसालारो से लड़ते,
सामने आकर खुल कर जंग करते.
छिप कर परदे के पीछे गुपचुप रहकर,
बेगुनाहों को मारना उनका खून बहाना,
यह कैसी बहादुरी यह कैसी कामना,

इससे जन्नत तो दूर,
जहन्नुम में भी जगह नहीं मिलनी.
निरपराध लोगो को बम से चीथड़े चीथड़े कर,
तुमने घृणा आतंक का जो बीज बोया भरपूर,
बड़ा होकर वह दावानल तुम्हे ही लीलेगा,
अपनी लपटों से   ख़ाक में मिला देगा.

अपने हुक्मरानों की कौन कहे,
लुंज पुंज आकंठ भ्रष्टाचार में लिप्त,
अपने अस्तित्व की लड़ाई में व्यस्त,
तू तू मै मै के शोर शराबे में डूबे,
घडियाली आसू बहा कर,
मातमपुर्सी की रस्म निभा कर,
बेशकीमती जान की मुट्ठी भर कीमत लगा कर,
अपने कर्तव्य की इतिश्री समझ कर,
मात्र खानापूरी में जुटे है सब.

आखिर निरपराध जनता कब तक,
बम गोलियों का शिकार होती रहेगी,
और नेता चैन की वंशी बजाते रहेंगे,
चाक चौबंद होने का झूठा दंभ भरते रहेंगे,

डपोर शंख की तरह अलाप लगाते रहेंगे,
कब तक हम आप विलाप करते रहेंगे,
आखिर कब तक?

शायद आतंक का यह सिलसिला,
कभी ख़तम होगा,
आशा की किरण कभी तो दिखाई देगी,
ऐसे भोर के इन्तजार में जिन्दगी,
खरावा खरावा चलती रहेगी.
वाह री मुंबई,
जिजीविषा का जो रास्ता तुमने दिखाया,
कर्मठता जीने की उस ललक के समक्ष,
हम सब नतमस्तक है.

इसी विश्वास के बल पर,
हम एक अविराम अभिराम सर्वोन्नत,
शांत प्रशांत प्रशस्त और गर्वोन्नत,
भारत के निर्माण में आगे बढ़ते रहेंगे,
मुंबई की इस जिजीविषा को,
सलाम करते रहेंगे सलाम करते रहेंगे।